दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL7**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): विक्रम ...

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 27/09/17

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

अच्छा

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 96 टिप्पणी (Remarks):

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) उर में माखनचोर गड़े।
अब कैसेहू निकसत नहिं, ऊधो ! तिरछे है जो अड़े।।
जदपि अहीर जसोदानंदन तदपि न जात छँड़े।
वहाँ बने जदुबंस महाकुल हमहिं न लगत बड़े।।
को बसुदेव, देवकी है को, ना जानैं औ बूझै।
सूर स्यामसुन्दर बिनु देखे और न कोऊ सूझै।।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पद्यावतरण भक्तिकाल के कृष्णभक्ति काव्य धारा के मूर्धन्य विद्वान 'सूरदास' द्वारा रचित 'सूरसागर' नामक कृति से लिया गया है। इस पद में गोपियां वक्रोक्ति विधान द्वारा उद्धव की बातों का जवाब दे रही हैं।

व्याख्या - गोपियां कहती हैं कि हमारे हृदय में माखनचोर अर्थात भगवान कृष्ण विराजमान हैं। वह इसमें से कैसे भी नहीं निकल सकते क्योंकि वह तिरछे होकर अड़े हुए हैं। यद्यपि जसोदा नंदन कृष्ण अहीर जाति के हैं तथा वह यदुवंश के महाकुल से संबद्ध हैं, परन्तु हमें बड़े नहीं लगते हैं। वह वसुदेव एवं देवकी के पुत्र हैं। सूरदास कहते हैं कि श्यामसुंदर कृष्ण को देखे बिना कुछ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी नहीं डूस पड़ता है।

विशेष -

- भाषा इन पंक्तियों में ब्रज है जो अपनी कोमलकांत पदावली के लिए प्रसिद्ध है।

- इन पंक्तियों में वाग्विदग्धता की शैली का प्रयोग किया है।

- 'गेय पद' की दृष्टि से इस का पद महत्वपूर्ण पद है।

- कृष्ण के प्रति प्रेम की प्रतिबद्धता को व्यंग्य शैली में वर्णित किया है।

- माधुर्य गुण से परिपूर्ण।

Good

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जोऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।
जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह गर्व।
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्व।।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ सूफी काव्यधारा के शीर्ष कवि 'मलिक मुहम्मद जायसी' की रचना 'पद्मावत' के नागमती वियोगखंड से ली गई हैं। नागमती अपने पति के अनुपस्थिति में बताती है कि उसकी सामान्य जरूरतों की पूर्ति कौन करेगा।

व्याख्या - इन पंक्तियों में बड़ी ही मार्मिक व्यंजना की गई है। नागमती कहती है कि वर्षा काल का मौसम समीप आ गया है मेढक, मोर, कोयल, पपीहा सब बोलने लगे हैं, परन्तु उसे चिंता इस बात की है कि उसका पति यहां नहीं है, तो उसके मंदिर रूपी घर को कौन छायेगा, जिन पत्नियों के पति घर पर हैं, वे सुखी हैं और गौरवान्वित महसूस कर रही हैं। वह कहती है कि मेरा पति तो बाहर गया है और मैं सभी सुखों को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भूल चुकी है।

विशेष -

- भाषा ठेठ अवधी है।
- नागमती वियोग की अवस्था में साधारण स्त्री का जीवन जीती है - ऐसे ही इन पंक्तियों में दिखाया गया है।
- प्रकृति का महत्व इन पंक्तियों में देखते ही बनता है।
- नागमती को दोहरा दुख है एक तो पति है नहीं, दूसरा वह दूसरी पत्नी की तलाश में गया है।

Gn! —

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) नैंक हँसो ही बानि तजि, लख्यौ मुहुँ नीठि।
चौका-चमकनि-चौंध में परति चौधि सी डीठि।।

संदर्भ एवं प्रसंग - 'बिहारी लाल' रीति काव्य परम्परा के शीर्ष कवि हैं। उन्होंने 'बिहारी सतसई' की रचना की यह पंक्तियां इसी से उद्धृत हैं। इसमें नायिका की सुंदरता का बखान किया गया है।

व्याख्या - बिहारी जी कहते हैं कि नायिका थोड़ा-सा ही मुस्कराती है तथा यह सुन्दरता उसके मुख से भी दृष्टिगोचर होती है। वह इसकी उसना चौका के चमकने तथा चंद्रमा की कलाओं से करने लगते हैं तथा उस नायिका के सामने यह भी चमत्कार ही नजर आते हैं।

विशेष -

- बिहारी प्रेम एवं शृंगार के कवि है जो इनकी इन पंक्तियों से व्यक्त होता है।
- भाषा की दृष्टि से ब्रज भाषा का सुंदर प्रयोग किया है।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- इनके काव्य पर लोकनिरपेक्षता का आरोप लगता है जो इन पंक्तियों से भी स्पष्ट होता है।
- दोहा जैसे छोटे छंद में भी पूरी कहानी कहने की क्षमता रखते हैं - बिहारी जी।
- माधुर्य गुण से परिपूर्ण पंक्तियाँ हैं।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) अरे भगाओ इस बालक को
होगा यह भारी उत्पाती
जुलुम मिटाएंगे धरती से
इसके साथी और संघाती
'यह उन सबका लीडर होगा
नाम छपेगा अख़बारों में
बड़े-बड़े मिलने आएंगे
लद-लदकर मोटर-कारों में

संदर्भ एवं प्रसंग - 'हरिजन गाथा' कवि 'नागार्जुन' की दलित संवेदना से ओत प्रोत कविता है। यह पंक्तियाँ इसी कविता से ली गई हैं। ज्योतिषी जी बच्चे के भविष्य को बतला रहे हैं कि ये बच्चा समाजवादी क्रांति का सूत्रधार एवं नेता होगा।

व्याख्या - इन पंक्तियों में ज्योतिषी जी भविष्यवाणी करते हैं कि यह बालक बहुत ही शैतान या उत्पाती होगा। इसे यहाँ रखना ठीक नहीं होगा। बल्कि सुरक्षित जगह पर इसका लालन - पालन होना चाहिए। आगे वह कहते हैं कि यह धरती से जुलुम को मिटायेगा तथा इसके साथी इसी की भाँति तेज तर्रार होंगे। यह उन सभी का नेता होगा। इसकी ख्याति चारो तरफ फैलेगी तथा बड़े-बड़े

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लीडर मोटर कारों में बैठकर इससे मिलने आयेंगे।

विशेष -

— समाजवादी क्रांति का आवाहन इन पंक्तियों में दिखता है।
— कृष्ण के मिथक से भी यह पंक्तियाँ जुड़ती हैं कि जन्म के बाद उन्हें दूसरी जगह स्थानान्तरित किया गया था।
— भाषा सहज, सरल एवं स्पष्ट है - खड़ी बोली।
— यह कविता बेलछी कांड की स्मृतियों पर आधारित है तथा कवि असमानता एवं अन्याय के खिलाफ विद्रोही मानसिकता रखता है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'अपनी मूल प्रकृति में पद्मावत एक त्रासदी है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पद्मावत जायसी की कालजयी रचना है तथा यह रत्नसेन, पद्मावती एवं नागमती के प्रेम सिंयोग, वियोग पर आधारित है।

कुछ विद्वानों ने इसकी कथा के आधार पर इसे त्रासदी माना है तथा बताया है कि निम्न कारणों से ऐसा है —

(1) यह नारी जीवन की त्रासदी है/ मुख्यतः नागमती के तथा साथ ही पद्मावती एवं नागमती के सती होने की त्रासदी भी है।

(2) पद्मावती की सुंदरता ही उसकी त्रासदी या कहें रत्नसेन की त्रासदी का कारण है जो अन्ततः मृत्यु को प्राप्त होता है — यह नायक की मृत्यु है।

(3) यह मध्यकालीन राजाओं देवपाल, अलाउद्दीन की सोच, मानसिकताओं एवं कार्यों की त्रासदी को ही व्यक्त करती है।

वास्तव में पश्चिमी साहित्य परम्परा में अरस्तू ने त्रासदी के कुछ लक्षण तय किये थे कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नायक की मृत्यु, हेमसिंधा के कारण पतन, नायिका का भद्र होना, विरेचनमूलक प्रभाव। परन्तु नायक की मृत्यु को छोड़ दिया जाये, तो कोई भी प्रभाव ऐसा नहीं ज्ञात पड़ता है।

रत्नसेन राजा है, परन्तु वह श्रृंगार लिप्सा के कारण पद्मावती को प्राप्त करना चाहता है कि लोक सोफलता के लिए नहीं, इसी प्रकार राघव-चेतन की कथा, पद्मावती के माता-पिता की कथा, हीरामन की उपस्थिति कथा को त्रासदी मूलक बनाने में योगदान नहीं करते हैं।

वास्तव में इस कथा की दूसरी कथा जो इसके अर्थ खुलने पर जुड़ती है, वह त्रासदी के तत्वों को पूरा नहीं कर पाती है, इसलिए 'पद्मावत' को सामान्य अर्थों में त्रासदी नहीं माना जा सकता है। यदि कोई इसके बाह्य लक्षणों के आधार पर इसे त्रासदी कहे, तो कह सकता है।

अन्य प्रभाव और बेहतर बना सकते हैं
मॉडल उत्तर देखें

10/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बिहारी की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनकी काव्य पहचान जितनी रीतिकालीन संवेदना के कारण है, उतनी ही बिम्ब योजना के कारण। बिहारी सतसई के दोहों को पढ़ने से ऐसा महसूस होता है कि आंखों के सामने चलचित्र चल रहा है।

बिम्ब योजना के विधान से कविता की न केवल प्रभाव क्षमता बढ़ती है अपितु आयु भी बढ़ती है। यही कारण है कि बिहारी के दोहों की मारक क्षमता आज भी उतनी है, जितनी तत्कालीन परिस्थितियों में थी।

बिहारी ने दृश्य, स्पर्श, श्रव्य, बिंबों के साथ ही गतिशील एवं स्थिर, एकल एवं संश्लिष्ट बिंबों का जबरदस्त प्रयोग किया। उदाहरण के लिए – 'झमकि झमकि टहलें करें' में श्रव्य बिंब उत्कृष्ट बन पड़ा है।

इसी के साथ 'रहि आवत चलि जात उत, चली

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ह: सातक हाथ' में नायिका की शीतशीलता के कारण शतिशीर बिम्ब उपस्थित है।

बिहारी मूलत: अनुमान तथा चमत्कार के कवि हैं, तो स्वाभाविक है कि बिम्ब इनके काव्य में समाहित हों। बिम्बों की दृष्टि से आधुनिक काल में नागार्जुन, मुक्तिबोध अग्रणी हैं, परन्तु बिहारी के सामने ये भी नहीं ठहरते। बिहारी पूर्व युग में ह्ररराय ने बिम्बों की अनुपम छटा बिखेरी है, परन्तु बिहारी के सामने वह भी फीके ही नजर आते हैं।

बिहारी जी के दोहे यदि अमरता को प्राप्त हुए हैं, तो उसका बड़ा कारण उनकी बिंब योजना ही है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बिम्बों के प्रयोग की दृष्टि से बिहारी की बराबरी कुछेक कवियों को छोड़कर कोई नहीं कर सकता।

अच्छा प्रयास

7½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पद्मावत में नागमती के विरह-वर्णन की विशिष्टताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मलिक मुहम्मद जायसी की रचना में नागमती का वियोग वर्णन एक अद्वितीय वस्तु है जिसकी प्रशंसा स्वयं आचार्य शुक्ल ने की है। नागमती के विरह-वर्णन में जायसी ने कुछ ऐसी विशिष्टताओं का समावेश किया है जो उसे सबसे अलग बनाता है।

सर्वप्रथम नागमती का विरह साधारण नारी का विरह है ये कोई काम लिप्सा में अतृप्त रानी का विरह नहीं है बल्कि विरह की स्थिति में नागमती अपने रानीपन को भूल जाती है जब वह कहती है – 'पुज नखत सिर ऊपर आवा, हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।' इसमें वही बातें समाहित हैं जो एक सामान्य स्त्री को परेशान करती हैं।

दूसरा नागमती के विरह में जो प्रकृति समाहित है वह उसे महत्वपूर्ण बना देती है। यूं तो सूर के काव्य में गोपियाँ 'मधुबन तुम कत रहत हरे' संवेदन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आरोप करती हैं, परन्तु नागमती के विरह में प्रकृति स्वयं शामिल है –

'फिर-फिर रोऊं कोऊ नहिं डोला, आधी रात विहंगम बोला।'

इसके अतिरिक्त नागमती का पति एक तो अनुपस्थित है, दूसरा वह एक अन्य स्त्री की तलाश में गया हुआ है। इतनी विषम एवं तोड़ने वाली परिस्थितियां के बावजूद नागमती अपने पति का सानिध्य चाहती है। वह मध्यकालीन समाज में पली-बढ़ी स्त्री है जो अपने पति से समानता की बात सोच भी नहीं सकती, वह तो चाहती है –

"यह तन जारौं छारि कै, कहौ कि पवन उड़ाव
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जंह पाव।"

नागमती का प्रेम विरह की अवस्था में भी पवित्र एवं पावन है। इसलिए कहा जा सकता है कि नागमती का प्रेम हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है तथा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

निष्कर्ष - नैतिकता में यह अद्वितीय है।

अच्छा

$8\frac{1}{2}$ / 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) मैं प्रेम को संदेह से ऊपर समझती हूँ। वह देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु है। संदेह का वहाँ जरा भी स्थान नहीं और हिंसा तो संदेह का ही परिणाम है। वह संपूर्ण आत्मसमर्पण है। उसके मंदिर में तुम परीक्षक बनकर नहीं, उपासक बनकर ही वरदान पा सकते हो।

संदर्भ एवं प्रसंग - 'गोदान' प्रेमचंद का कालजयी उपन्यास है, यह पंक्तियाँ इसी उपन्यास से उद्धृत है। इसमें 'मालती' प्रेम की व्याख्या बड़ी सहजता एवं पवित्रता के अर्थ में कर रही है।

व्याख्या - मालती कहती है कि प्रेम अशरीरी होता है वास्तव में इसमें व्यक्ति के तन नही मन जुड़ते हैं इसमें शक की कोई गुंजाइश नही है। वह कहती है कि जब संदेह होता है तो हिंसा ~~अवश्य~~ अवश्य होती है परन्तु प्यार तो आत्मसमर्पण है एक दूसरे के सामने। प्यार के मंदिर में वास्तव में कोई उपासक बनकर अर्थात आत्मसमर्पण करके ही विजयी वरदान पा सकता है।

विशेष -

- मालती देवी एक गतिशील चरित्र है - पे परिवर्तन

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बाद की भगती से स्पष्ट होता है।

— अन्यत्र भी कहा गया है –

"प्रेम बहुत पावन है, सुहाग है शगुन है
ये तन का नहीं, आत्मा का बंधन है।"

— प्रेम को मंदिर की भाँति पवित्र बताया गया है।

— भाषा सहज, सरल, दुबोध जड़ी बोली है – हिन्दुस्तानी शैली का प्रयोग।

— 'प्रेम देह की वस्तु - - - - आत्मा की वस्तु' में ध्रुव भाषा का प्रयोग किया है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक काल के श्रेष्ठ नाटककार 'मोहन राकेश' के नाटक 'आषाढ़ का एकदिन' से ली गई हैं। यह कथन नाटक के नायक कालिदास का है जो उनकी प्रेमिका मल्लिका को संबोधित है।

व्याख्या - कालिदास कहते हैं कि मल्लिका तुम मुझे पहचान नहीं रही हो और ये स्वाभाविक है कि तुम न ही पहचानो। (यह उस खण्ड का वक्तव्य है जब कालिदास कश्मीर का शासन छोड़कर दोबारा ग्राम-प्रान्तर में आते हैं) वास्तव में कालिदास स्वयं अपराध बोध से ग्रसित हैं कि उन्होंने अपने जीवन में कई गलत निर्णय किये इसीलिए आज यह स्थिति उनकी हुई है। यहाँ तक इन निर्णयों का परिणाम ये रहा है कि कालिदास स्वयं को भी नहीं पहचान पा रहे हैं।

1.

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विरोध -

- इन पंक्तियों में अस्तित्ववाद का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है।
- भाषा गूढ़ है, परन्तु सहजता से समझ में आती है।
- व्यक्ति का गलत निर्णय उसके संबंधों को कितना प्रभावित कर सकता है इसे दिखाया गया है।
- कालिदास एवं मल्लिका के प्रेम की परिणति को दिखाया गया है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पर मुझसे कुछ नहीं बोला जाता। बस मेरी बाँहों की जकड़ कसती जाती है, कसती जाती है। रजनीगन्धा की महक धीरे-धीरे तन-मन पर छा जाती है। तभी मैं अपने भाल पर संजय के अधरों का स्पर्श महसूस करती हूँ, और मुझे लगता है, यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ 'एक दुनिया समानान्तर' में संकलित कहानी 'यही सत्य है' से ली गई हैं। ये कहानी 'मन्नू भंडारी' की प्रतिनिधि कहानियों में से एक है।

व्याख्या - कहानी की मुख्य पात्र नायिका अपने प्रेमी का सानिध्य पाकर सोचती है कि प्रेम के अतिरेक में शब्द समाप्त हो जाते हैं। बस भावनाएं रह जाती हैं, स्पर्श रह जाता है। वह कहती है कि जैसे ही संजय ने उसका स्पर्श किया उसे आभास होता है कि यही प्रेम सच्चा है बाकी सभी प्रेम, संबंध झूठ मिथ्या है। यहाँ तक कि उसका निशीथ का प्रेम भी उसके सामने कुछ नहीं।

विशेष -

- 'यही सत्य है' कहानी नयी कहानी की प्रतिनिधि कहानियों में से एक है - यह अन्तर्द्वन्द्व की कहानी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

- इनमें दिखाया है कि पहला प्रेम ही वास्तविक होता है।

- भाषा सहज, सरल एवं प्रवाहमयी है।

- रूप एवं प्रेम का महत्व अन्यत्र भी दिखाया गया है —

"और सब समय पराया है
उस उतना ही रूप अपना
तुम्हारी पलकों का कँपना।"

- प्रेम में भावनाएं एवं शरीर दोनों उपस्थित हैं।

5 1/2 / 10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जब आप याद करेंगे कि मुगल बादशाहों के ज़माने में इन कोल किरातों का आखेट होता था और जो पकड़े जाते थे, वे काबुल में बेच दिए जाते थे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शासन में लाखों की तादाद में उन्हें जरायम पेशा करार दिया गया, तब तुलसीदास की प्रगतिशीलता समझ में आएगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत गद्यावतरण डा० रामविलास शर्मा के निबंध 'तुलसी साहित्य के सामंत विरोधी प्रोलेमान (मूल्य)' से लिया गया है। यह 'निबंध-निलय' में संकलित है। इन पंक्तियों में मुगल काल में प्रचलित दास व्यवस्था तथा तुलसी द्वारा इन्हें दिया गया सम्मान को अभिव्यक्त हुआ है।

व्याख्या - शर्मा जी कहते हैं कि मध्यकाल में कोल, किरात आदि जनजातियों का जीवन बड़ा संकटमय था, उनका व्यापार किया जाता था, आखेट किया जाता था, ब्रिटिश सत्ता के दौरान भी उनकी स्थिति अच्छी नहीं थी। उस दौरान भी उनका भाँति-भाँति प्रकार से शोषण किया जाता था। इसी युग में तुलसी जैसे चरित्र हुए जिन्होंने अपने काव्य में कोल, किरातों, निषादों को उचित स्थान दिया तथा उन्हें राम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इनकी समानता की बात करते हैं।

विशेष -

— तुलसी दास पर आक्षेप लगाया जाता है - 'ढोल गंवार शूद्र पशु नारी — सकल ताड़ना के अधिकारी' उसी का जवाब इन पंक्तियों में दिया गया है।

— मध्यकाल में जनजातियों की शोषण दशा को दर्शाया गया है।

— काबुल में दासों की बिक्री से स्पष्ट होता है। उस काल में काबुल दास व्यापार की मंडी रहा होगा।

— भाषा प्रगतिवादी कवियों के अनुरूप क्रांतिकारी व सहज है।

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

8. (क) क्या आप इस मत से सहमत हैं कि गोदान महाकाव्यात्मक उपन्यास है? तर्कपुष्ट उत्तर दीजिये। 20

महाकाव्य आदिकालीन कविता की एक महत्वपूर्ण विधा है ~~परन्तु~~ जिसमें अपने समय का संपूर्ण इतिहास का चित्रण होता है। चूँकि उपन्यास भी अपने समय के संपूर्ण यथार्थ का वृहुआयामी चित्रण करता है, अतः इसे भी महाकाव्यात्मक उपन्यास का दर्जा दिया जाता है। यह बात गोदान के संदर्भ में और भी स्पष्ट होती है। गोदान में कृषक की जीवनगाथा को बहुत ही मार्मिकता के साथ सामने रखा गया है, इसलिए इसे महाकाव्यात्मक उपन्यास का दर्जा दिया जाता है।

महाकाव्यात्मक उपन्यास होने के लिए उस उपन्यास में अपने समय की सभी समस्याओं को उठाया गया हो, सभी वर्गों का पर्याप्त चित्रण हो, पूरे देश-काल का प्रतिनिधित्व करता हो, साथ ही पूर्णतया यथार्थपरक हो।

इस दृष्टि से देखें, तो गोदान में उस समय के समाज में प्रचलित सभी समस्याओं जैसे - धर्म, बिरादरी, कृषक, दलित, विधवा, दहेज, ऋण, गरीबी आदि को पूरी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नग्नता के साथ उठाया गया है। होरी के माध्यम से पूरी कृषक जीवन की महागाथा ही कह डाली है।

इसी के साथ नगरीय जीवन का भी बड़ा ही संतुलित वर्णन किया है जैसा कि उस समय के भारत में था, उपन्यास में जमींदार, उद्यमी, बुद्धिजीवी, संपादक, दलित, कृषक, साहूकार सभी वर्गों का वर्णन किया है।

इस उपन्यास की शिल्पगत विशेषताएं भी इसे महाकाव्यात्मक उपन्यास का दर्जा दिलाने में सहायक है जैसे - भाषा - सहज हिन्दुस्तानी शैली का प्रयोग किया गया है, चरित्रों की दृष्टि से मुख्य एवं गौण के आनुपातिक महत्व का ध्यान रखा है, कथानक में बिखराव नहीं है।

परन्तु इसके बावजूद इस पर कुछ आक्षेप भी हैं - नगरीय जीवन को कम दिखाया है
- आदर्शों का प्रक्षेपण चरित्रों द्वारा - मालती, मेहता
- कथा का बिखराव आदि।

परन्तु वास्तव में ये आक्षेप उचित नहीं है क्योंकि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद जैसा उपन्यासकार अपनी रचना के शीर्ष बिंदु पर पहुँचकर इन तत्वों को समाहित करना भूल जाये, ऐसा संभव नहीं लगता। वास्तव में यह रणनीति है ताकि मुख्य कथा को पूरा मौका मिल सके।

अतः कहा जा सकता है कि गोदान एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है डा॰ रामविलास शर्मा का कथन है- यदि तत्कालीन ~~साहित्य~~ इतिहास नष्ट हो जाये तो प्रेमचंद के उपन्यासों द्वारा उसे दोबारा लिखा जा सकता है।

अच्छा

11/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'पूस की रात' कहानी की संवेदना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'पूस की रात' कहानी हिंदी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कहानीकार 'प्रेमचंद' की कहानी कला की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ कहानियों में शुमार है। इसमें गरीबी, कृषकों की दशा, प्रकृति आदि का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया गया है।

संवेदना की दृष्टि से इस कहानी में एक किसान की दशा का बड़ा ही सुंदर वर्णन किया गया है कि वह किस प्रकार खेती-किसानी में अपने को झोंक देता है, परन्तु अपनी मूलभूत आवश्यकताओं तक की पूर्ति नहीं कर पाता है। ठंड की भयंकर रात में वह अपने कुत्ते के साथ सोने को विवश है, एक कंबल तक वह नहीं खरीद सकता।

इस कहानी में जो काल खंड है वह पूस की रात अर्थात जाड़ा का है तथा देश की दृष्टि से ग्रामीण जीवन को दिखाया गया है। यह कहानी एक ओर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

घटना का पर्दाफाश करती है कि जो पैसे किसान ने कम्बल के लिए बचाकर रखे थे, उन्हें साहूकार को देना पड़ा। वास्तव में यह वही समस्या है जो आज हमें विदर्भ, बुंदेलखंड, तेलंगाना, मंदसौर के किसान को देखकर लगती है।

अंत में जब कृषक का पूरा खेत नष्ट जाता है, तो वास्तव में वह दुखी नहीं है, वह तो इस बात से खुश है कि कम से कम अब इस अंधकार जाड़े की रात में यहां सोना तो नहीं पड़ेगा।

इस कहानी में ~~संवाद~~ छोटे-छोटे व चुस्त है ~~कि जिसके~~ कारण यह पूरी सजगता के साथ पाठक के सामने खुलती है इसमें लेखकीय हस्तक्षेप कम हुआ है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि 'पूस की रात' संवेदना की दृष्टि से यथार्थवाद के तत्वों को पूर्णतया व्याप्त करती है तथा प्रेमचंद की कहानी कला

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

की सर्वोच्चता की अभिव्यक्ति करती है।

और गहराई लाएँ

मॉडल उत्तर देखें

6/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) गोदान के 'गोबर' की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

गोदान प्रेमचंद का महाकाव्यात्मक उपन्यास है इसमें गोबर, जो कि होरी का लड़का है, एक विद्रोही चरित्र है वास्तव में यह वह समय है जब जमींदारी व्यवस्था की कोख से पूंजीवाद निकल रहा था, तो उसी स्थिति में कृषक मजदूर में बदल रहा था/ इसी संक्रमण काल में गोबर पूंजीवादी व्यवस्था में मजदूरों का प्रतिनिधित्व करता है।

गोबर का विद्रोही भावना से युक्त है - 'गोबर लंबा, सांवला, इकहरा युवक था ---- तेवर पर --- विद्रोह था,' साथ ही वह धर्म, बिरादरी, मरजाद को नहीं मानता / उसका मानना है जब हाथ में पैसे हो तो जाति-बिरादरी को कोई नहीं पूछता।

गोबर संयुक्त परिवार की जगह 'एकल परिवार' को ज्यादा अच्छा समझता है/ वह कहता है कि आज अगर दुनिया पर किसी ने हाथ उठाया तो मेरा उसका सो.

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

जोड़ेगा।

गोबर जीवन में प्रेम को महत्व देता है वह झुनिया से प्रेम करता है तथा उसे अपने साथ घर में रखकर पत्नी का दर्जा देता है। वह विधवा पुनर्विवाह की समस्या का समाधान करता है।

अंत में गोबर का जो अपने परिवार के प्रति स्वरूप परिवर्तन दिखाया गया है। वह वास्तव में उसके गतिशील चरित्र होने का प्रमाण है। नगरीय जीवन शैली में एक मजदूर की स्थिति व हैसियत क्या होती है, इसे बखूबी गोबर के माध्यम से दिखाया गया है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि 'गोबर' गोदान का एक गतिशील चरित्र है जो तत्कालीन समाज की जड़ता को तोड़ने का प्रयास करता है तथा स्वतंत्र चरित्र के गुणों को धारण करता है।

अच्छा प्रयास

7½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation